भारतीय कला और बौद्ध कला - एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० निशीथ गौड़

असि० प्रोफ़ेसर, डी० ई०आई०

भर्तृहरि ने कला के ज्ञान से रहित मनुष्य को पूँछ और सींग रहित पशु के समान माना है यथा 'साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात पशुपुच्छविषाणहीनः' मन के भावों को सौंदर्य के साथ दृश्य रूप में प्रकट करना ही कला है। कला मानव के हृदय के इतनी निकट होती है कि जो कुछ मन में होता है वह कला में परिलक्षित हो जाता है। कला मानव की सौंदर्य कल्पना को साकार रहती है।

कला शब्द की व्युत्पत्ति कल + अच् +टाप के संयोग से हुई है जिसका अर्थ है शब्द करना, बजना, आवाज करना। कला शब्द के अर्थ है जिनमें किसी भी वस्तु का लघु अंश, चंद्रमण्डल का सोलहवाँ अंश, राशि के तीसवें भाग का साठवाँ अंश। कला शब्द की एक अन्य व्युत्पत्ति इस प्रकार से की जा सकती है- क+ला- कामदेव, सौंदर्य, प्रसन्नता, आनंद। "कं लाति ददातीतिकला अर्थात सौंदर्य को दृश्य रूप में प्रकट कर देना ही कला है।"

भारतीय कला

भारतीय कला भारत के विचार धर्म, तत्वज्ञान और संस्कृति का दर्पण है। भारतीय जीवन की विस्तृत व्याख्या कला के माध्यम से ही संभव हो पायी है। भारतीयों का जीवन, उनका विश्वास, धर्म, उपासना विधि आदि भारतीय कला में सुरक्षित हैं। वास्तु, शिल्प, मूर्तियां, चित्र, कांस्य प्रतिमा, काष्ठ कर्म, मणिकर्म, स्वर्णरजतकर्म आदि के रूप में भारतीय कला की विशद सामग्री प्राप्त हुई है। जब भारतीय संस्कृति का प्रसार सुदूर देशों में हुआ तो भारतीय कला के रूप और गुण

©Indira Gandhi National Open University

उन देशों की कला में बद्धमूल हो गए। सौभाग्यवश इस कला की सामग्री आज भी भी उन देशों में सुरक्षित है और भारतीय कला का यशोगान करती है।

भारतीय कला की परम्परा अति प्राचीन है। इसका आरम्भ सिंधु घाटी से लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व से होता है। सिंधु घाटी से लेकर नन्द वंश के उदय से पूर्व ३२६ ई० पू० तक का समय भारतीय कला का आदियुग था। इसके पश्चात मौर्यकाल से लेकर हर्ष के समय तक कला का मध्य युग था। इस युग के दो भाग है। पहले भाग के अंतर्गत मौर्य, शुंग, कण्व और सातवाहन युग की कलाकृतियां हैं तथा दूसरे भाग में पहली शती ई० से लेकर सातवीं शती ई० तक कनिष्क से लेकर हर्ष के समय तक की कलाकृतियाँ हैं। हर्ष के उपरांत भारतीय कला की महत्ता का चरम युग आता है। इसके भी दो भाग हैं -

पूर्व काल - ७०० ई० से ९०० ई० तक

उत्तर काल - ९०० ई० से १२०० ई० तक

भारतीय कला के इस साढ़े चार सहर्स वर्ष के दीर्घकाल में हमें यत्र तत्र भारत तथा बृहत्तर भारत में इसके अनेक प्रमाण प्राप्त होते हैं।

भारतीय कला का वर्गीकरण

कलाओं की संख्या के विषय में भी विभिन्न मत है। 'कामसूत्र' तथा 'शुक्रनीति' में चौंसठ कलाओं का उल्लेख मिलता है। 'प्रबंध कोश' में ७२ तथा बौद्ध ग्रन्थ 'ललित विस्तर' में ८६ कलाओं का नामोल्लेख किया गया है। आधुनिक दृष्टिकोण से कलाओं को दो वर्गों में विभाजित किया गया हे- उपयोगी कलाएं तथा ललित कलाएं। उपयोगी कलाओं का सम्बन्ध मानव जीवन की दैनिक आवश्यकताओं से

©Indira Gandhi National Open University

हैं। इस वर्ग में वस्त्र निर्माण, आभूषण निर्माण, भोजन पकवान बनाना आदि की गणना की जाती है। ललित कलाओं के अंतर्गत सौंदर्यानुभूति तथा आनंद प्रदान करने वाली कलाओं की गणना की जाती है। पाश्चात्य विद्वानों ने कला के पांच वर्ग वर्ग बताए हैं- १ स्थापत्य २ मूर्ति ३ चित्र ४ संगीत ५ काव्य कला

भारतीय कला की विशेषताएं -

भारतीय कला भारत के भव्य जीवन का एक गौरवशाली अध्याय है। इसमें उस सृजनात्मक भावना की अभिव्यक्ति हैं जिस पर किसी भी राष्ट्र को गर्व हो सकता है। सिंधु घाटी से प्राप्त स्नानागार, विशाल भवन, योगीराज की मूर्ति, अशोक अशोक स्तम्भों के शीर्ष, बुद्ध की गुप्तकालीन मूर्तियाँ, अजंता, एलोरा, एलीफेंटा और और नटराज शिव की कांसे की मूर्तियों सभी प्राचीन भारत की कला के विकास की विभिन्न अवस्थाओं और विशेषताओं के प्रतीक हैं।

प्राचीनता

भारतीय कला विश्व की प्राचीनतम जीवित कलाओं में से एक है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर अब तक इसका क्रम अनवरत बने रहना, इस कला की प्रमुख विशेषता है। भारत में प्रागैतिहासिक काल की प्राचीनतम कला के अवशेष उत्तरप्रदेश में मिर्जापुर तथा मध्यप्रदेश की पर्वतीय गुफाओं में मिलते हैं। मैसूर, हैदराबाद, बेलारी (दक्षिण भारत) आदि स्थानों से प्राप्त पाषाण की चिकनी कुल्हाड़ियों में नवपाषाण युगीन कला के प्रमाण मिले है। सिंधु घाटी सभ्यता में हैदराबाद, मोहन जोदड़ो आदि केन्द्रो से नगर विन्यास, भवन निर्माण, मूर्ति कला तथा चित्रकला के जीवनोपयोगी उपकरण प्राप्त हुए है। ये सभी प्रमाण भारतीय कला की प्राचीनता का प्रतिनिधित्व करते है।

©Indira Gandhi National Open University

परंपरागतता - प्राचीन काल से भारतीय कला की एक परम्परा सी चली आ रही है। भारतीय कला नवीन परिप्रेक्ष्य में नवीन गुणों, प्रतीकों और सिद्धांतों को सहज स्वीकार करती रही परन्तु उसने अपनी मौलिकता का त्याग नहीं किया।

भावाभिव्यंजना - भारतीय कला भावाभियक्ति प्रधान कला है। प्राचीन भारतीय कलाकार आंतरिक भावो के अंकन में अधिक प्रवीण थे। महात्मा बुद्ध की प्रतिमाओं पर बुद्ध के मुख कर बुद्ध धर्म के अन्तर्निहित भावो का दर्शन किया जा जा सकता है।

आध्यात्मिकता - प्राचीन काल में कला धर्म की अनुगामिनी बनी रही। यह कला आत्म-साक्षात्कार करने का माध्यम प्रतीत होती है। आध्यात्मिकता की ओर प्रवृत्त करना इस कला का चरमोद्देश्य था।

प्रतीकात्मकता - भारतीय कलाकारों ने अपनी कला में प्रतीकों का प्रयोग किया है जैसे-'हंस' परमेश्वर का 'कमल' माता पृथ्वी का और 'चक्र' धर्म तथा कर्म के द्वंद्व द्वंद्व का प्रतीक है।

जीवन के साथ कला का सामंजस्य- भारतीय कला का जीवन के साथ गहरा संबंध रहा है। इस कला की उत्पति और विकास एक विशिष्ट वातावरण में हुआ और देश की परिस्थितियों ने कला की अभिव्यक्ति के रूपों का निर्धारण करके उसकी गति पर नियंत्रण रखा। जब महायान संप्रदाय का प्रभाव समाज पर बढ़ा तो तुरंत ही कला ने उसे ग्रहण किया।

भारतीय कला अपनी इन्ही विशेषताओं के कारण विश्व कला के इतिहास में विशिष्ट विशिष्ट स्थान रखती है। भारतीय कला में लोक की सांस्कृतिक परम्परा सहज ही देखी जा सकती है ।

©Indira Gandhi National Open University

बौद्ध कला- बौद्ध कला के समस्त रूप, गुण, अर्थ और उद्देश्य सम्पूर्ण भारतीय कला के अंग हैं। बौद्ध कला प्राचीन भारतीय कला का वह रूप है जिसमें महात्मा बुद्ध तथा उनके द्वारा प्रतिपादित बौद्ध धर्म का प्रभाव तथा सन्देश कला के रूप में में अंकित एवं अभिव्यक्त किया गया है ।

बौद्ध कला का विकास- यद्यपि बौद्ध धर्म का प्रतिपादन छठी शताब्दी ई. पू. में हुआ था तथापि बौद्ध कला का एतिहासिक युग मौर्य साम्राज्य की स्थापना के पश्चात् अशोक महान के समय से शुरू हुआ। इस समय तक बौद्ध कला का ठीक ठीक विकास न होने का प्रमुख कारण यह था की इससे पूर्व निर्माण कार्यो में लकड़ी का प्रयोग किया जाता था जो शीघ्र ही कालावतीत हो जाती थी।

एक तो लकड़ी के स्थान पर पाषाण का प्रयोग किया जाना और दूसरे अशोक का झुकाव बौद्ध धर्म की ओर होना इन दोनों कारणों ने बौद्ध कला को विकास करने और समृद्ध होने का सुअवसर प्रदान किया। अशोक के शासनकाल के अधिकांश स्थापत्य बौद्ध धर्म से सम्बंधित है। मौर्य साम्राज्य के पतनोपरांत शुंगवंश के शासन शासन काल में बौद्ध कला को क्षति तो उठानी पड़ी परन्तु स्थानीय रूप में इसका विकास होता रहा। कुषाण काल में कनिष्क की प्रेरणा और उत्साह को प्राप्त करके बौद्ध कला पुनः तीव्र गति से विकास की ओर बढ़ चली। गुप्तकाल में बौद्ध कला की की परम्परा बनी रही, परन्तु इसे महत्व की दृष्टि से दूसरा स्थान प्राप्त था। गुप्तकाल की कला में हिंदू धर्म को सर्व प्रमुख महत्व प्राप्त था। इन समस्त युगों में बौद्ध गुफा मंदिरों तथा विहारों की परम्परा का क्रम निरंतर बना रहा।

स्तूप- बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् उनकी अवशिष्ट अस्थियों के आठ भाग किये गए। इनको मगध नरेश अजात शत्रु, वैशाली के लिच्छवियों, कपिलवस्तु के

Volume 2, Issue 1, 2023, p. 60-68, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

शाक्यों आदि ने ग्रहण किया तथा बुद्ध के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के लिए लिए अस्थि भाग पर स्मारक स्वरूप समाधियों का निर्माण करवाया। साधारण भाषा में इन समाधियों को स्तूप कहा जाता है।

स्तूप का निर्माण एक उल्टे कटोरे के समान अर्ध गोलाकार के रूप में किया जाता था। इसके शिखर पर आत्मा की सर्वोपरिता के प्रतीक के रूप में एक दण्ड तथा छत्र बनाया जाता था। इन स्तूपों के चारों ओर एक जंगला बना होता था जिसकी चार दिशाओ में एक-एक फाटक होता था जंगले पर प्रायः अनेक मूर्तियाँ बनी रहती थीं जिसमें महात्मा बुद्ध के जीवन की घटनाओं का चित्रण किया जाता था।

स्तूपों की विशेषताएं- स्तूप कला की निम्नांकित विशेषताएं हैं-

१- यह कला मूलतः लोक कला है तथा इस पर राजसी प्रभाव नहीं है।

२. इस कला पर पुरोहित वर्ग की छाप नहीं है।

3. स्तूप धर्म के प्रतीक नहीं है वरन ये बुद्ध के प्रति अभिव्यक्त श्रद्धा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

४. इनकी कला में कलाकार ने कथाकार का रूप धारण किया हुआ है ।

५. स्तूपों द्वारा महात्मा बुद्ध की ऐतिहासिकता प्रमाणित होती है ।

विहार- महात्मा बुद्ध के आदेशानुसार वर्षाकाल को छोड़कर शेष सभी ऋतुओ में बौद्ध भिक्षु तथा भिक्षुणियाँ धर्म प्रचार में संलग्न रहते थे ।भिक्षु की दीक्षा से पूर्व तत्पश्चात साधना हेतु तथा वर्षाकाल में निवास करने के लिए उचित स्थान की आवश्यकता हुई तो विहारों का निर्माण कराया गया इस प्रकार विहार वह स्थान था जहां पर बौद्ध संघ निवास करता था ।

©Indira Gandhi National Open University

विशेषताएं- १. विहार बौद्ध धर्म की सादगी तथा साधना के प्रतीक हैं ।

२. इनके निर्माण द्वारा बौद्ध भिक्षुओ को सामान्य गृहस्थों के साथ निवास करने करने की आवश्यकता नहीं पड़ी तथा वे शांतिपूर्वक साधना में लीन रहते थे ।

३. इनके द्वारा बौद्ध धर्म को संगठनात्मक वैशिष्ट्य प्राप्त हुआ ।

बौद्ध मूर्तिकला-बौद्ध मूर्तिकला का प्रारम्भ मौर्य सम्राट अशोक के समय से मिलता मिलता है अशोक ने इसके प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान किया किन्तु महात्मा बुद्ध की मूर्ति का निर्माण शुंग काल में ही प्रारम्भ हुआ बुद्ध मूर्ति की पूजा के प्रचलन के पूर्व बौद्ध मतानुयायी उन स्तूपों की ही पूजा करते थे जिनमें बुद्ध एवं उनके प्रमुख शिष्यों के अवशेष होते थे इन पूजित स्तूपों को चैत्य कहते हैं अशोक के काल में कुछ चैत्य पर्वतों को काटकर बनाये गए, कुछ ईंटो के बने थे । भारतीय चैत्य कक्ष का रूप ईसाइयों के गिरिजाघर से कुछ मिलता जुलता है ।

हीनयानी बौद्ध प्रतीकों या स्मारकों की पूजा में ही विश्वास करते थे जबकि महायानी मानुषी रूप में बुद्ध प्रतिमा निर्माण के पक्ष में थे अशोक के काल में हीनयान का अधिक जोर था साँची भरहुत और बोधगया की प्रारंभिक कलाकृतियों में बौद्ध प्रतीकों का ही पूजन मिलता है । शुंगकाल में भक्तिधारा के प्राबल्य एवं हिन्दू देवताओं तथा जैन तीर्थकरों की मूर्तियों के निर्माण को प्रोत्साहन दिया इस काल की बुद्ध या बोधिसत्व प्रतिमाये खड़े रूप में या पद्मासन में बैठी हुई मिलती हैं हैं किन्तु गुप्तकालीन मूर्तियां केवल खड़े रूप में मिलती हैं ।ज्ञान या सम्बोधि प्राप्त होने के पहले बुद्ध की संज्ञा ' बोधिसत्व ' थी उसके बाद वे बुद्ध प्रसिद्ध हुए इन दोनों रूपों का चित्रण मथुरा कला में मिलता है दोनों में अन्तर यह है कि बोधिसत्व को मुकुट आदि विविध आभूषणों से अलंकृत राजवेश में दिखाया जाता है

©Indira Gandhi National Open University

और बुद्ध को इन अलंकारों से रहित केवल वस्त्र धारण किये हुए, बुद्ध के सिर पर पर बालों का जटा- जूट (उष्णीष) रहता है, जो उनके बुद्धत्व का सूचक है।

गांधार कला- गंधार यवनों का मुख्य केंद्र था तथा वहां यवन-शिल्प और बौद्ध आदर्श के समन्वय से एक विशिष्ट कला का उद्गम हुआ जिसे 'गांधार कला ' का का नाम दिया गया है। दुर्भाग्यवश गांधार प्रतिमाओं का काल निर्णय अनिवार्यतया विवादग्रस्त है इसलिए जहाँ कुछ विद्वान गांधार कला की उत्पति प्रथम शती ई० ई० पू० में मानते हैं और कुछ अन्य उसे ई0 प्रथम शताब्दी में रखते हैं। गांधार कला के विकास में यवन कारीगरों और कारीगरी का हाथ था न कि यवन शासकों का। पहले यह माना जाता था कि बुद्ध प्रतिमा को जन्म देने का श्रेय गांधार कला कला को ही है किन्तु इस पर संदेह प्रकट किया गया है और यह कहा गया है कि मथुरा में बुद्ध की प्रतिमा का आविर्भाव स्वतंत्र रीति से और संभवतःगांधार प्रतिमा प्रतिमा के पूर्व हुआ।[6] कुषाण युग में आंध्रदेश में बौद्ध मूर्तिकला की बहुत उन्नति हुई। इनमें अमरावती स्तम्भ के संगमरमर के शिलाखंड प्राप्त हुए हैं। यहाँ बुद्ध की की ६ फ़ीट ऊँची खड़ी मूर्तियां अपनी शांति और गंभीरता में अद्वितीय हैं।

गुप्त युग में चौथी और पांचवी सदी ई0 में बुद्ध बोधिसत्व तथा अन्य बौद्ध बौद्ध देवी-देवताओं की अनेक मूर्तियां प्रचुर मात्रा में बनायीं गयीं। इस युग की मूर्तियों में सौंदर्य और आध्यात्मिकता दोनों का समन्वय हुआ है। पांचवी सदी से बुद्ध और बोधिसत्वों की अष्टधातु की मूर्तियां बनायीं जाने लगीं ये अत्यंत कलापूर्ण कलापूर्ण हैं।

बौद्ध चित्रकला-प्राचीन भारतीय चित्रकला ने बौद्ध धर्म से बहुत प्रेरणा ली। अजंता अजंता गुफाओं के अनेक चित्रों में बुद्ध के जीवन से सम्बंधित अनेक घटनाओं को

©Indira Gandhi National Open University

को अंकित किया गया है। अजंता के चित्रों में बुद्ध और बोधिसत्व के चित्र तथा जातक ग्रन्धों के वर्णनात्मक दृश्य देखे जा सकते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राचीन भारतीय कला एवं बौद्ध कला में परस्पर अत्यंत साम्य है जहाँ भारतीय कला में भावाभिव्यक्ति प्रधान है वहीँ बौद्ध कला में भी भावों की अभिव्यक्ति दृष्टिगोचर होती है जैसे कि अमरावती शैली में महात्मा बुद्ध की प्रतिमाओं में शांति शांति और गंभीरता को अधिक महत्व दिया गया है वहीँ वे जीवन की तीव्र गति, गंभीर प्राण शक्ति और ओजपूर्ण क्रियाकलाप को व्यक्त करती हैं। कुछ मूर्तियों में भावावेश उन्माद की सीमा तक पहुँचता हुआ प्रतीत होता है। दोनों ही कलाओं में परम्परागतता, आध्यात्मिकता, प्रतीकात्मकता एवं सौंदर्य हैं।

सन्दर्भ

१- 'काव्यशास्त्र की रूपरेखा' - डॉ० रामदत्त भारद्वाज पृ० ८

२- भारतीय संस्कृति - डॉ० लल्लनजी गोपाल तथा डॉ० बृजनाथ सिंह यादव

३- प्राचीन भारतीय संस्कृति - लूनिया

४- प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति, धर्म तथा दर्शन -

डॉ० ईश्वरी प्रसाद एवं शैलेन्द्र शर्मा पृ० २५८

५- गान्धार-कला पर द्र० - फूशेर

६- बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास - डॉ० गोविन्द चंद्र पांडे

©Indira Gandhi National Open University